Vol 7 Issue 2 Nov 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2017

जनपद पिथौरागढ़ के तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

डॉ. डिगर सिंह फर्स्वाण
विभागाध्यक्ष (बी.एड) , देवभूमि इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन लालपुर रूद्रपुर उधम सिंह नगर. उत्तराखण्ड.

सारांश–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद पिथौरागढ़ के तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कुल विद्यार्थियों एवं सेवित क्षेत्र में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के कुल बच्चों का अध्ययन हेतु चयन किया गया है। विद्यालयों में नामांकन अनुपात का अर्थ बालक–बालिका का निर्धारित उम्र में निर्धारित कक्षा में नामांकित होकर गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्त करते हुए निरन्तर कक्षा प्रोन्नत करने से होता है। जिससे प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता लाया जा सकता है तथा विद्यालय पलायन तथा अपव्यय एवं अवरोधन जैसी समस्याओं को रोका जा सकता है। तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। शिक्षा के सभी के लिए परिकल्पना को को दृष्टिगत् रखते हुए सरकार तथा शिक्षा विभाग द्वारा निरन्तर बुनियादी तथा प्राथमिक शिक्षा तक सबकी पहुँच तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने की पहल की जा रही है जिससे बच्चों के भविष्य का ठोस आधार विकसित हो सके। परन्तु कई कारणों से जैसे माता–पिता की निरक्षरता, बेरोजगारी, आर्थिक तंगी, विषम भौगोलिक परिस्थितियॉं जागरुकता का अभाव, घरेलू कार्य में माता–पिता का हाथ बटाना तथा समुचित व्यवस्थाओं का अभाव होने से आज भी बुनियादी शिक्षा में कक्षा नामांकन जैसी समस्यायें व्याप्त है जिनके समाधान किये बिना तथा गुणवत्तापरक बुनियादी शिक्षा प्रदान किये बिना व्यक्तिए समाज तथा देश का सर्वांगीण विकास करना संभव नहीं है।

शब्द कुंजी : नामांकन, तुलनात्मक अध्ययन, विद्यालय पलायन, कक्षा प्रोन्नत, सेवित क्षेत्र, सार्वभौमीकरण।

प्रस्तावना–

प्रस्तुत प्रवाह आरेखण से सम्बन्धित समस्यायें प्राथमिक शिक्षा में वैश्विक स्तर पर व्याप्त है। यह समस्या केवल भारतवर्ष की ही नहीं अपितु पूरे विश्व की समस्या हो गयी है। समाज में गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच, भाग्यवादी एवं धार्मिक दृष्टिकोण आदि समस्याओं से बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः पीढ़ी दर पीढ़ी प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण, सर्वसुलभता, एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सभी प्रयास असफल हो जाते हैं।

रैकवार, (2000) के अनुसार शिक्षा में गुणवत्ता का अर्थ है मानक स्तर की शिक्षा विद्यार्थी अपनी आयु एवं कक्षा के अनुसार शिक्षा के न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करें यह समाज की मॉग होती है । शिक्षा मनुष्य के विकास की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित हो सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में ''सभी के लिए शिक्षा'' की पुनरावृत्ति की गयी थी। इसमें जाति, धर्म, वर्ग, क्षेत्र तथा गरीबी–अमीरी के भेदभाव के बिना सभी बच्चों को क्षमता और समानता के सिद्धान्त पर आधारित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने का संकल्प लिया गया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में यह उल्लेख किया गया है कि देश में संचालित विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का सघन मूल्यांकन आवश्यक है जिससे विभिन्न कार्यक्रमों की प्रगति एवं गुणवत्ता का आंकलन किया जा सकता है। प्रारम्भिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन एक भीषण समस्या है। इस समस्या के प्रति 1929 में हर्टांग समिति ने ध्यान आकृष्ट किया था। समिति ने कहा कि यद्यपि प्राथमिक विद्यालयों तथा बच्चों की संख्या में वृद्धि हुई है पर इसका अभिप्राय यह नहीं है कि प्राथमिक शिक्षा में प्रगति हो रही है आज भी कितने ही अभिभावक ऐसे हैं जो कठिन परिस्थितियों के शिकंजे में फंसे होने के कारण अपने बच्चों को प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम पूर्ण करने से पूर्व ही विद्यालयों से पृथक कर लेते हैं। गुप्ता (1983), तोमर (1991) तथा मिश्र (1998) के अनुसार भारत में औपचारिक शिक्षा के साथ अनौपचारिक शिक्षा का भी महत्व कम नही रहा है क्योंकि इसके माध्यम से 6 से 14 आयु वर्ग के शालात्यागी तथा कतिपय कारणों से निरक्षर रह गये बालक–बालिकाओं को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया गया है

नयाल (1985) ने शिक्षा में पलायन की समस्या का अध्ययन करने के पश्चात यह पाया कि हाईस्कूल स्तर पर पलायनवादी व्यवहार के लिए विभिन्न सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक कारक संयुक्त रूप से जिम्मेदार थे। हमारी अनाकर्षक शिक्षा व्यवस्था भी हाईस्कूल स्तर पर पलायन के लिए जिम्मेदार थी।

VOLUME - 7 | ISSUE - 2 |NOVEMBER - 2017

कोठारी कमीशन (1964–1966) में भी शिक्षा के विभिन्न स्तरों में अपव्यय एवं अवरोधन का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि जब तक शिक्षा प्रक्रिया में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या के समाधान का सार्थक प्रयास नहीं किया जाता तब तक शिक्षा में गुणवत्ता एवं शिक्षा के सफल संचालन का प्रयास कल्पना मात्र है। कमीशन के अनुसार निम्न प्राथमिक स्तर पर बालकों में 56 प्रतिशत व बालिकाओं की शिक्षा में 62 प्रतिशत अपव्यय था। प्राथमिक स्तर पर यह अनुपात बालक एवं बालिकाओं में क्रमशः 24 प्रतिशत व 34 प्रतिशत था। इसी प्रकार उक्त कमीशन में यह स्पष्ट किया गया था कि बालकों की कक्षा 1 में अवरोधन 40.3 प्रतिशत तथा कक्षा 4 में 21.7 प्रतिशत तथा कक्षा 8 में 13.2 प्रतिशत था, इसी प्रकार बालिकाओं की शिक्षा में कक्षा 1, 4 व 8 में अवरोधन क्रमशः 47.1 प्रतिशत, 25.6 प्रतिशत् तथा 16.6 प्रतिशत था जो कि बालकों की शिक्षा की अपेक्षा अधिक था।

पूर्व अध्ययन समीक्षा–पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से रैकवार (2000), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), नयाल (1985), कोठारी कमीशन (1964–1966), डी0पी0ई0पी0 प्प् (2006), गुप्ता (1983), तोमर (1991), मिश्र (1998) एवं वर्धा शिक्षा योजना (1937) ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

अध्ययन के उद्देश्य–प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किया गया है:–

जनपद पिथौरागढ़ के तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना–शोध कार्य की मुख्य परिकल्पना निम्न है:–

तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन विधि–प्रस्तुत शोध अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन है जिसके लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श–प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड के जनपद पिथौरागढ़ के सीमान्त तहसील डीडीहाट का चयन किया गया है। डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 1 से 5 तक के सभी बच्चों तथा सेवित क्षेत्र में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के कुल बच्चों का अध्ययन के लिए चयन किया गया है।

उपकरण तथा तकनीकें–प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श समूहों के प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर ज मान की सहायता से मध्यमान अन्तर की सार्थकता का आंकलन किया गया है। इसके अलावा 0.01 एवं 0.05 स्तर पर सार्थकता स्तर का अध्ययन किया गया हें

't' परीक्षण के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया–

$$t = \frac{M1 - M2}{SED}$$

M_1= पहले न्यादर्श समूह का मध्यमान

M_2= दूसरे न्यादर्श समूह का मध्यमान

SED = मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि

$$SED = \sqrt{PQ\left[\frac{1}{N1} + \frac{1}{N2}\right]}$$

$$P = \frac{N1P1 + N2P2}{N1 + P1}$$

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या–जनपद पिथौरागढ़ के तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं मे नामांकन अनुपात का लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर ज्ञात करने हेतु प्रोन्नत दर की तुलना एवं सार्थकता की जॉच t टेस्ट के द्वारा की गयी है।

VOLUME - 7 | ISSUE - 2 |NOVEMBER - 2017

तालिका संख्या–01
नामांकन अनुपात–(कुल बच्चे)

क्र.सं.	कक्षा	कक्षा 1 से 5 तक कुल नामांकन	6–11 वर्ष की कुल जनसंख्या	नामांकन अनुपात %
1.	1	4424	4429	99.88
2.	2	4438	4453	99.66
3.	3	4636	4640	99.91
4.	4	4734	4738	99.91
5.	5	4690	4693	99.93

तालिका संख्या–01 में तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कुल बच्चों का कक्षा 01 से कक्षा 05 तक नामांकन अनुपात दर्शाया गया है। तालिका में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि कक्षा 01 का नामांकन अनुपात 99.88 प्रतिशत था। उसी वर्ष डीडीहाट के सेवित क्षेत्र में 6–11 वय वर्ग के बच्चों की कुल संख्या 4429 थी जिनमें से 4424 बच्चे विद्यालयों में नामांकित थे तथा 5 बच्चे विद्यालय जाने से वंचित रह गये। इसी प्रकार कक्षा 02 में डीडीहाट का नामांकन अनुपात 99ण्66 प्रतिशत था उसी वर्ष 6–11 वय वर्ग की कुल संख्या 4453 थी जिनमें से 4438 बच्चे विद्यालयों में नामांकित थे तथा शेष 15 बच्चे विद्यालय जाने से वंचित रह गये। कक्षा 03 में डीडीहाट का नामांकन अनुपात 99.91 प्रतिशत था। उसी वर्ष 6–11 वय वर्ग की कुल संख्या 4640 थी जिनमें से 4636 बच्चे स्कूलों में नामांकित थे तथा 04 बच्चे स्कूल जाने से वंचित रह गये। कक्षा 04 का नामांकन अनुपात 99.91 प्रतिशत था। उसी वर्ष 6–11 वय वर्ग की कुल संख्या 4738 थी जिनमें से 4734 बच्चे स्कूलों में नामांकित थे तथा शेष 04 बच्चे स्कूल जाने से बंचित रह गये। इसी प्रकार कक्षा 05 में डीडीहाट का नामांकन अनुपात 99.93 प्रतिशत था उसी वर्ष 6–11 वय वर्ग की कुल जनसंख्या 4693 थी जिनमें से 4690 बच्चे विद्यालय में नामांकित हुए तथा 03 बच्चे स्कूल जाने से वंचित रह गये।

तालिका संख्या–02
नामांकन अनुपात–बालक बालिका

क्र.सं.	कक्षा	कक्षा 1 से 5 तक कुल नामांकन		6–11 वय वर्ग की कुल जनसंख्या		नामांकन अनुपात %	
		बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका
1.	1	2171	2254	2171	2258	99.95	99.82
2.	2	2213	2225	2219	2234	99.72	99.59
3.	3	2330	2306	2333	2307	99-87	99.95
4.	4	2401	2333	2404	2334	99.87	99.95
5.	5	2408	2282	2411	2282	99.87	100

तालिका संख्या–02 में तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कुल बालक–बालिकाओं का कक्षा 01 से कक्षा 05 तक नामांकन अनुपात दर्शाया गया है। तालिका में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि कक्षा 01 में बालकों का नामांकन अनुपात 99.95 प्रतिशत था तथा बालिकाओं का नामांकन अनुपात 99.82 प्रतिशत था। कक्षा 02 में बालकों का नामांकन अनुपात 99. 72 प्रतिशत था तथा बालिकाओं का नामांकन अनुपात 99.59 प्रतिशत था। कक्षा 03 में बालकों का नामांकन अनुपात 99.87 प्रतिशत था तथा बालिकाओं का नामांकन अनुपात 99.95 प्रतिशत था। कक्षा 04 में बालकों का नामांकन अनुपात 99.87 प्रतिशत था तथा बालिकाओं का नामांकन अनुपात 99.95 प्रतिशत था। कक्षा 05 में बालकों का नामांकन अनुपात 99.87 प्रतिशत था तथा बालिकाओं का नामांकन अनुपात 100 प्रतिशत था।

VOLUME - 7 | ISSUE - 2 |NOVEMBER - 2017

तालिका संख्या–03
नामांकन अनुपात–कक्षा 01

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	2171	99.95	99.88	0.12	0.10	1.30	सार्थक नहीं
बालिका	2258	99.82					

तालिका संख्या–03 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा–01 में नामांकन अनुपात में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 1.30 था। डीडीहाट में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात की समस्या से 0.12 प्रतिशत बालक तथा बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि डीडीहाट में रहने वाले बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका संख्या–04
नामांकन अनुपात–कक्षा 02

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	2219	99.72	99.65	0.35	0.18	0.72	सार्थक नहीं
बालिका	2234	99.59					

तालिका संख्या–04 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा–02 में नामांकन अनुपात में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0.72 था। डीडीहाट में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात की समस्या से 0.35 प्रतिशत बालक तथा बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि डीडीहाट में रहने वाले बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका संख्या–05
नामांकन अनुपात–कक्षा 03

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	2333	99.87	99.91	0.09	0.09	0.89	सार्थक नहीं
बालिका	2307	99.95					

तालिका संख्या–05 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा–03 में नामांकन अनुपात में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0.89 था। डीडीहाट में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात की समस्या से 0.09 प्रतिशत बालक तथा बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि डीडीहाट में रहने वाले बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका संख्या–06
नामांकन अनुपात–कक्षा 04

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	2404	99.87	99.91	0.09	0.09	0.89	सार्थक नहीं
बालिका	2334	99.95					

VOLUME - 7 | ISSUE - 2 |NOVEMBER - 2017

तालिका संख्या–06 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा–04 में नामांकन अनुपात में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0.89 था। डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात की समस्या से 0.09 प्रतिशत बालक–बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि डीडीहाट में रहने वाले बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका संख्या–07
नामांकन अनुपात–कक्षा 05

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	2411	99.87	99.93	0.07	0.08	1.62	सार्थक नहीं
बालिका	2282	100					

तालिका संख्या–07 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा–04 में नामांकन अनुपात में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 1.62 था। डीडीहाट में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात की समस्या से 0.07 प्रतिशत बालक तथा बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि डीडीहाट में रहने वाले बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

निष्कर्ष

जनपद पिथौरागढ़ के तहसील डीडीहाट के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात का लिंग के आधार पर अध्ययन करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए।

(I) कक्षा 1 में बालकों का नामांकन अनुपात 99.95 प्रतिशत तथा बालिकाओं का नामांकन अनुपात 99.82 प्रतिशत था।
(ii) कक्षा 2 में बालकों का नामांकन अनुपात 99.72 प्रतिशत तथा बालिकाओं का नामांकन अनुपात 99.59 प्रतिशत था।
(iii) कक्षा 3 में बालकों का नामांकन अनुपात 99.87 प्रतिशत तथा बालिकाओं का नामांकन अनुपात 99.95 प्रतिशत था।
(iv) कक्षा 4 में बालकों का नामांकन अनुपात 99.87 प्रतिशत तथा बालिकाओं का नामांकन अनुपात 99.95 प्रतिशत था।
(v) कक्षा 5 में बालकों का नामांकन अनुपात 99.87 प्रतिशत तथा बालिकाओं का नामांकन अनुपात 100 प्रतिशत था।

अतः तहसील डीडीहाट में कक्षा 1–5 अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में नामांकन अनुपात में लिंग के आधार पर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यद्यपि दोनों न्यादर्शों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। अतः परिकल्पनाए सही सिद्ध होती हैं।

अध्ययन के निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर नामांकन अनुपात के अध्ययन के उपरान्त निम्नलिखित सुझाव समीचीन प्रतीत होते है। ये निष्कर्ष एवं सुझाव शिक्षा के योजनाकारों, प्रशासकोंए शिक्षा विभाग तथा शिक्षकों के लिए प्राथमिक शिक्षा के प्रसार तथा गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

1. प्राथमिक शिक्षा में कक्षा नामांकन में आने वाली समस्याओं के कारणों को चिन्हित कर उनके समाधान के लिए लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए जिससे विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक वातावरण सृजित किया जा सकता है जिससे बच्चे उच्च शैक्षिक उपलिब्ध स्तर को प्राप्त कर सकते है।
2 बुनियादी शिक्षा में एक कक्षा में एक से अधिक वर्ष व्यतीत करने के कारणों को पता लगाकर उसके समाधान हेतु ठोस नीति तैयार किया जा सकता है।
3 प्राथमिक शिक्षा में कक्षा नामांकन की समस्या के समाधान के लिए शिक्षण नवाचारों का प्रयोग कर शिक्षण को व्यावहारिक, आसान व रूचिकर बनाने का प्रयास अपेक्षित है।
4 जो विद्यार्थी विद्यालय से बाहर हैए अनुतीर्ण हो रहे है तथा कक्षा में नामांकित नही हो पा रहे है अथवा निम्न शैक्षिक उपलिब्ध के कारण अवसादग्रस्त है उनके मार्गदर्शन हेतु परामर्शदाता की व्यवस्था की जानी चाहिए।
5 प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन जैसी समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए। इस हेतु माता–पिता तथा अभिभावकों को प्रेरित करने के लिए निरन्तर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है।

6. प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाकलापो में बच्चो की समुचित भागीदारी सुनिश्चित कराकर तथा शिक्षण में खेल विधि का प्रयोग किया जाना चाहिएए जिससे बच्चों में शिक्षण के प्रति रूचि तथा आत्मविश्वास में वृद्धि किया जा सके जिससे निरन्तर नामांकन तथा कक्षा प्रोन्नत को प्रोत्साहित किया जा सकता है।
7. प्राथमिक शिक्षा हेतु दूरस्थ क्षेत्रों में समस्त शैक्षिक सुविधायें विकसित कर नामांकन और ठहराव में वृद्धि किया जा सकता है।
8. प्राथमिक विद्यालयों में बार–बार अनुतीर्ण होनेए धनाभाव तथा अन्य कारणों से विद्यालय पलायन के कारणों को पता लगाकर उसके समाधान हेतु ठोस नीति तैयार किया जा सकता है।
9. शिक्षा सभी के लिए जैसी परिकल्पना की साकार करने हेतु ठोस एवं प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए।

स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा में कक्षा नामांकन की समस्या होने के कारण शत् प्रतिशत शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करना संभव नहीं है। जिससे शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन तथा विद्यालय पलायन जैसी समस्यायें व्याप्त होती हैं। जब तक प्राथमिक शिक्षा में कक्षा नामांकन की समस्या के कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर करने का सार्थक प्रयास नहीं किया जायेगा तथा शतः प्रतिशत बच्चों का विद्यालयों में नामांकन नहीं कराया जाता तब तक राष्ट्र तथा समाज के भविष्य का ठोस आधार विकसित नहीं किया जा सकता है। ऐसा प्रयास किया जाना आवश्यक होगा क्योंकि समाज एवं राष्ट्र का भविष्य इन्हीं बालक व बालिकाओं के कन्धों पर है। जब तक सभी बालक–बालिकाओं को विद्यालयों में नामांकित कराकर उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर उनका सर्वांगींण विकास नहीं किया जाता तब तक समाज एवं राष्ट्र के सर्वांगींण विकास की कल्पना करना सम्भव नही होगा। क्योकि प्राथमिक शिक्षा किसी भी शिक्षा की नींव होती है। यह शिक्षा आगे की शिक्षा प्राप्त करने के साधन या माध्यम होते है। इन्हीं पर आगे की शिक्षा निर्भर करती है। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा भविष्य के शिक्षा की नींव होती है। यदि यह नींव मजबूत होती है तो बच्चे की आगे की शिक्षा सुचारु रुप से चलती है। अतः शिक्षा के सार्वभौमिकरण को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा सभी के लिए जैसी परिकल्पना को साकार किया जाना आवश्यक होगा, जिसे शत्–प्रतिशत बालक–बालिकांए प्राथमिक शिक्षा में नामांकित होकर निरन्तर गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्त करते हुए आगे बढ़ सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

रैकवार, रामगोपाल (2000) प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता स्तर की समस्या, प्राइमरी शिक्षक, अप्रैल, 12–16।
गुप्ता, दलजीत (1983) ''ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ नॉनफॉरमल एजुकेशन प्रोग्राम'' (ऐज ग्रुप 9–14) रन बाई डिफ्रेन्ट एजेन्सीज इन द स्टेट ऑफ मध्य प्रदेश पी0एच0डी0 एजुकेशन, भोपाल विश्वविद्यालय।
मिश्र, जयनारायण (1998) अनुदेशकों की दृष्टि में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की समस्यायें, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाय, 15–23।
तोमर, लज्जाराम (1991) भारतीय शिक्षा के मूल तत्व, सुरूचि प्रकाशन केशवकुंज झण्डेवाला, नई दिल्ली, संस्करण।
गैरेट, एचण् ई (1981) मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी। दशम संस्करण। बी एफ एण्ड सन्स बॉम्बे।
नयाल, जीण् एस (1985) विद्यालय से पलायन के कारण भारतीय आधुनिक शिक्षा। वर्ष द्वितीय अंक चतुर्थ। एनण् सीण् ईण् आरण् टीण् नई दिल्ली।
उत्तरांचल दूरस्थ शिक्षा कार्यकम (2006) विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एवं विश्लेषण। उत्तरांचल सभी के लिए शिक्षा परिषद डीण् पीण् ईण् पीण्– 3 देहरादून।
पाठक, पीण् डी एवं त्यागी, जीण् एसण् डीण् (2008) भारतीय शिक्षा के आयोग कोठारी कमीशन सहित। आगरा पब्लिकेशन आगरा।
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2002) सर्व शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए एक अभियान। नई दिल्ली : प्रारम्भिक शिक्षा एवं साक्षरता विभाग।

डॉ. डिगर सिंह फर्स्वाण
विभागाध्यक्ष (बी.एड) , देवभूमि इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन लालपुर रूद्रपुर उधम सिंह नगर. उत्तराखण्ड.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com